National Research Journal of Social Sciences
Volume-10, Issue-1, January-June 2025
PP: 139-143
ISSN: 2348-473X
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 6.74)
Journal Website: www.nrjss.in

आरसी प्रसाद सिंह की कविताओं में राष्ट्रीय और प्रगतिशील चेतना

बेबी कुमारी

शोधार्थी, विश्वविद्यालय हिंदी- विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वर नगर, दरभंगा

शोध–सार :

आरसी प्रसाद सिंह की रचनाओं का फलक बहुत विस्तृत और व्यापक है। यही कारण है कि उन्हें किसी एक धारा के कवि के रूप में प्रतिष्ठित नहीं किया जा सकता। चूंकि उनका जन्म एक ऐसे समय में हुआ था जब देश परतंत्रता की बेड़ियों में जकड़ा था, इसलिए स्वाभाविक रूप से उनकी रचनाओं में देश प्रेम और राष्ट्रीयता का प्रभावशाली सौंदर्य दृष्टिगोचर होता है। हृदय और मस्तिष्क से वे प्रगतिवादी चेतना से संपन्न रचनाकार थे। इसी लिए उनकी परवर्ती रचनाओं में स्पष्ट रूप से प्रगतिवादी चेतना की झलक मिलती है। यह विडंबनापूर्ण है कि आलोचकों ने हर हिंदी साहित्यकार को किसी न किसी खांचे में फिट करने की कोशिश की है लेकिन बहुमुखी प्रतिभा के धनी आरसी प्रसाद सिंह को जब वे किसी एक खांचे में स्थापित नहीं कर पाए तो उनके महत्त्व को ही कम करने की कोशिश की गई। यह सर्वविदित है कि आरसी प्रसाद सिंह को वह सम्मान हिंदी साहित्य जगत नहीं दे सका जिसके वे हकदार थे। यद्यपि संस्थाओं और आलोचकों ने अन्यान्य कारणों से उन्हें सम्मान नहीं दिया लेकिन उनकी जीवंत रचनाएं आज भी साहित्य प्रेमियों के हृदय में बसी हैं।

बीज–शब्द :– प्रगतिशीलता, प्रगतिवाद, राष्ट्रीयता, स्वतंत्रतापूर्व, छायावादोत्तर, स्वातंत्र्योत्तर

बचपन में ही पिता का साया सर से उठ जाने के कारण आरसी प्रसाद सिंह ने आरंभिक अवस्था से ही जीवन की दुश्वारियों को बहुत करीब से महसूस किया। उथल–पुथल भरे जीवन में उन्होंने एक तरफ राष्ट्रीय भावना का प्रबल प्रवाह देखा तो दूसरी ओर रोटी का संकट देखा। इसी लिए उनकी कविताओं में एक तरफ राष्ट्रीय जागरण का विराट स्वरूप 'वीर कुंवर सिंह' और 'चाणक्य शिखा' के माध्यम से दिखलाई पड़ता है और दूसरी तरफ 'जीवन का झरना' जैसी रचनाओं में प्रगतिशीलता के अवयव दृष्टिगोचर होते हैं। डॉ. जितेंद्र प्रसाद सिंह ने इस संदर्भ में लिखा है– "सच्चे अर्थ में प्रगतिशील कविताएँ मात्र रसात्मक ही नहीं होतीं, मानवता के लिए उदात्त चेतना का अजस्र स्रोत सदृश सिद्ध होती हैं, विश्व को जीने की प्रेरणा देने वाली होती हैं और समग्र रूप में वे काव्य होती हैं, कोरा सिद्धांत नहीं।"1 उक्त पंक्तियों से स्पष्ट है कि डॉ. सिंह ने काव्य की महत्ता बल दिया है। कई अवसरों पर प्रगतिवादी शैली की रचनाओं के साथ यह समस्या उत्पन्न हुई कि वे राजनीतिक नारे से अधिक नहीं हो सके लेकिन आरसी प्रसाद सिंह ने उक्त तथ्य का पूरा ख्याल रखा है। यही कारण है कि उनकी रचनाओं में केवल थोथा दर्शन नहीं है बल्कि कवित्व प्रमुख है। उनकी कविताओं में दर्शन कवित्व के बाद आता है। दरअसल आरसी बाबू का प्रगतिवाद विशिष्ट किस्म का है। उनकी प्रगतिशीलता केवल द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद के दायरे में सिमटी हुई नहीं है बल्कि गांव, लोक, समाज की जो चिंताएं हैं उसपर मौलिक ढंग से सोचना, विचार करना और उसके निवारण ढूंढना उनकी प्रगतिशीलता का परिचायक है। स्वतंत्रता पूर्व जिस छायावादी कविता ने अस्तित्व और आकार ग्रहण किया वह सर्वसामान्य के लिए दुरूह और दुष्कर थी। यह आरसी बाबू की प्रगतिशीलता ही थी कि उन्होंने अपनी भाषा को इतना सहज बनाया कि उसे हर कोई पढ़ और समझ सके। प्रख्यात आलोचक प्रो. गोपेश्वर सिंह ने ठीक ही लिखा है– "छायावादी कुहेलिका से कविता को बाहर निकालने के अभियान में कवियों की जो नई जमात सबसे पहले सामने आई, उसमें 'नेपाली', 'बच्चन', 'दिनकर', 'आरसी', 'नरेन्द्र शर्मा', 'अंचल', 'सुमन', 'कुमुद', 'जानकीवल्लभ' आदि प्रमुख थे। छायावादी प्रवृत्ति के विपरीत अपनी सरल-सहज भाषा, लोक-चिन्ता, उन्मुक्त एवं मांसल प्रेम-वर्णन, मस्ती और फक्कड़पन के कारण ये कवि खूब पढ़े और सुने गए।"2 वस्तुतः आरसी प्रसाद जी का यह स्पष्ट मानना था कि जिसके लिए कविता लिखी जाए अगर कविता उसे ही समझ न आए तो कविता का कोई औचित्य नहीं। ऐसी प्रगतिशीलता भी उन्हें औचित्यविहीन लगती थी। इसी लिए आरसी प्रसाद सिंह की प्रगतिशीलता का बंधी–बंधाई कसौटी के आधार पर मूल्यांकन नहीं किया जा सकता। उनकी निम्नांकित पंक्तियां यद्यपि परंपरागत प्रगतिवाद का बोध नहीं कराती हैं लेकिन अपने दायरे में वे प्रगतिवादी ही हैं। पंक्तियां दृष्टव्य हैं–

"बाधा से रीड़ों से लड़ता, वन के पेड़ों से टकराता।

बढ़ता चट्टानों पर चढ़ता, चलता यौवन में मदमाता।

© Copyright @ Authors

 ISSN: 2348-473X
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 6.74)
Journal Website: www.nrjss.in

लहरे उठती हैं, गिरती हैं, नाविक नाविक तट पर पछताता है।

तब यौवन बढ़ता है आगे निर्झर बढ़ता ही जाता है।।"3

उक्त पंक्तियों में स्पष्ट रूप से लड़ने और संघर्ष करने की बात की गई है। यद्यपि शोषक–शोषित की परंपरागत परिस्थितियां उक्त पंक्तियों में उद्घाटित नहीं हुई हैं परंतु जीवन में किया जाने वाला संघर्ष अपने आप में प्रगति का परिचायक है। और अगर आरसी प्रसाद सिंह की कविताओं को बिंबों और प्रतीकों से समझने की कोशिश की जाएगी तब स्थिति और अधिक स्पष्ट हो जाएगी। 'बाधा' जिससे वे लड़ने कि बात करते हैं वह शोषक का प्रतीक स्वाभाविक रूप से हो सकता है। प्रतीकों में प्रगतिशीलता को स्थापित करने के अलावा उन्होंने स्पष्ट रूप से अपनी कविताओं में साम्राज्यवाद का विरोध किया और साम्यवाद की प्रतिष्ठा की। अपने काव्य संग्रह 'आरसी' में वे लिखते हैं–

"साम्यवाद का घोर प्रचारक हूँ

भीषण विप्लववादी हूँ।"4

उक्त पंक्तियों से स्पष्ट है कि उन्हें यह कहने में कोई हिचक नहीं थी कि वे साम्यवादी हैं। यह बात अलग है कि आरसी प्रसाद ने लीक से हट कर चलने की कोशिश की लेकिन अपनी मंजिल से वे कभी भटके नहीं। उनकी निम्नांकित पंक्तियां क्रांति का आह्वान करती हैं–

"चूर क्रूर साम्राज्यवाद हो

त्रासक शासक शेष

क्रांति मचे फिर एक बार हो,

जग में चारों ओर।"5

महत्त्वपूर्ण बात यह है कि वे सिर्फ अपने आसपास या पूरे भारत की बात उक्त पंक्तियों में नहीं करते बल्कि विश्व में जहाँ कहीं भी विषमता और शोषण है वे वहां क्रांति को ही अंतिम विकल्प मानते हैं। स्पष्ट है कि वे विश्व बंधुत्व के समर्थक और प्रचारक हैं। पूंजीवाद और साम्राज्यवाद से त्रस्त समाज को उनकी निम्नांकित पंक्तियां आंदोलित करती हैं–

"साम्राज्यवाद की छाती पर, नौकरशाही मदमाती पर,

खुलकर खेलें लाल-क्रांति इन पूँजीपति की छाती पर !"6

उक्त पंक्तियों में कवि की जन पक्षधरता और साम्यवाद के लिए प्रतिबद्धता स्पष्ट रूप से लक्षित होती है। आज जब दुनिया नेताओं के जयजयकार में व्यस्त है तब आरसी बाबू इस बात के लिए याद किए जाते हैं कि उन्होंने व्यक्ति को नहीं बल्कि विचार को महत्त्व दिया। अपनी प्रसिद्ध कविता 'रक्त पर्व' में वे लिखते हैं–

"गाओ साम्यवाद गान

बोलो जय!! जय!!"7

आरसी प्रसाद सिंह की राष्ट्रीय मूल्यों से ओतप्रोत कविताएं मानव–मन को झंकृत करती हैं। उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर और निजी रूप से स्वतंत्रता बहुत प्यारी थी। मुक्ति की कामना उनकी अधिकांश रचनाओं का केंद्र बिंदु है। वे दासता को नकारा कर मृत्यु को वरण करना उचित समझते हैं इसीलिए कहते हैं–

"एक निमिष की पराधीनता से बढ़कर है मृत्यु भली

और दासता के हलवे से भली मुक्ति की मूंगफली।"8

उन्होंने उन लोगों पर अपनी कविताओं के माध्यम से कटाक्ष किया है जो अपने आप को सभ्य बोल कर दूसरे देशों पर कब्जा करते रहे हैं। भारत शक्तिशाली होकर भी कभी किसी की स्वतंत्रता का अतिक्रमण नहीं करता, इस बात पर कवि को गर्व है। वे पूरी मुखरता से इस बात को स्वीकार करते हैं कि–

© Copyright @ Authors

ISSN: 2348-473X
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 6.74)
Journal Website: www.nrjss.in

"हम पहनाते उछल–उछल कर स्वतंत्रता की जयमाला
हम स्वतंत्र रह कर दूसरों को भी स्वतंत्र देखना चाहते हैं–
किसी देश की स्वतंत्रता का हरण नहीं हम करते हैं
अपनी पावन मातृभूमि में जीवन–मुक्त विचरते हैं।"9

उक्त पंक्तियों से कवि का दर्शन स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है। कवि आरसी प्रसाद सिंह के ह्रदय में राष्ट्रीय नायकों के प्रति बड़ा सम्मान था। जब सुभाष चंद्र बोस जैसे महानायक की मृत्यु की खबर प्रसारित हुई तो 'उदय' कविता संग्रह में उन्होंने नेताजी पर कविता लिखी। निम्नांकित पंक्तियां दृष्टव्य हैं–

"शोक ! शोक ! हा महाशोक ! उत्साह विटप निर्मूल हुआ
मधुर स्वप्न उच्छिन्न हुआ,
यह कैसा उल्कापात हुआ? चूर-चूर हो गया,
ह्रदय पर दारुण बज्राघात हुआ टूट गई भावों की माला, जीवन-मोती बिखर गए
ऋतुपति के आगमन-पूर्व ही वन-वन-उपवन उजड़ गए।"10

नेताजी की मौत पर जितनी मार्मिक पंक्तियों में उन्होंने अपने हार्दिक उद्गारों को अभिव्यक्त किया है उससे उनकी राष्ट्रीय संवेदना की झलक मिलती है।

डॉ. सत्येंद्र प्रसाद सिंह ने आरसी प्रसाद सिंह की राष्ट्रीय भावना के संबंध में लिखा है– "उनके अंतर्मन में राष्ट्रवाद की गंगा तरंगित रही। क्योंकि वे स्वाधीनता के पश्चात भी भारत पर पाकिस्तान एवं चीन की ओर से बराबर आक्रमण का भय देख रहे थे। अतः वे राष्ट्रवासियों को सतत जागरूक रखने के लिए अपने काव्यों के माध्यम से प्रयत्नशील थे।"11 दरअसल हर बड़ा साहित्यकार द्रष्टा होता है वह अपने समय से आगे की स्थितियों की कल्पना कर लेता है जो अन्य लोग नहीं कर पाते। इसी लिए वह आगामी खतरों के प्रति लोगों को सचेत करता है। आलोचक शालिग्राम सिंह अशांत ने आरसी प्रसाद सिंह के राष्ट्रवाद के संदर्भ डॉ. सत्येंद्र प्रसाद सिंह से मिलती–जुलती बात ही लिखी है– "राष्ट्रवाद का उद्गाता कवि दूरदर्शी है। वह जानता है कि स्वतंत्रता हस्तगत कर लेने के उपरान्त भी हम अपने उत्तरदायित्वों से मुक्त नहीं हो सकते। राष्ट्रीय अस्मिता की अक्षुण्णता के लिए राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण भी परमावश्यक है। इसके साथ ही अनवरत आत्मसजगता भी। कवि राष्ट्रीय अधोपतन, चारित्रिक स्खलन, जीवन-मूल्यों का क्षरण एवं अपसंस्कृति की आँधी में अपना आत्मगौरव और अस्मिता को लुप्त हुए देखकर भी मौन रहने वाले निष्क्रिय नेताओं एवं नवयुवकों को झकझोर कर सचेत भी कर रहा है।"12 उक्त पंक्तियों से स्पष्ट है कि आरसी प्रसाद सिंह एक सजग कवि थे जिनके लिए राष्ट्रीय अस्मिता सर्वोपरि थी। वे उस पीढ़ी के साहित्यकार थे जिन्होंने परतंत्रता का दंश झेला था। इसी लिए किसी भी परिस्थिति में वे देश की अखंडता और स्वतंत्रता पर आंच आने देना नहीं चाहते थे। अपनी कविताओं के माध्यम से इसी लिए उन्होंने युवाओं का जागृत करने का महनीय कार्य किया है।

बाबू वीर कुंवर सिंह पर केंद्रित उनका महाकाव्य कोटि–कोटि युवाओं को जोश और उत्साह से लबरेज करने के लिए ही लिखा गया है। पुस्तक के आरंभिक पृष्ठ पर ही लिखा है 'राष्ट्रीय चेतना के परिप्रेक्ष्य में जन–जागरण का वीर रस प्रधान महाकाव्य'। पूरी रचना इस बात का प्रमाण है कि आरसी बाबू यह नहीं चाहते थे कि भारत का युवा राष्ट्रीय चिंताओं को विस्मृत कर बेफिक्री से सो जाए। उन्होंने वृद्ध नायक के चरित्र को महिमामण्डित ही विशेष प्रयोजन से किया है। वे युवाओं को यह भान कराते हैं कि जब देश की रक्षा के लिए अस्सी वर्ष का वृद्ध मोर्चा संभाल सकता है तो युवाओं को अपने गर्म रक्त से भारत माता की भूमि को सींचने के लिए हमेशा तैयार और तत्पर रहना चाहिए। उक्त महाकाव्य की निम्नांकित पंक्तियां दृष्टव्य हैं–

"ओह धर्मन, धर्म-रक्षा के लिए तलवार है यह!
ब्रिटिश सत्ता को हिलाने के लिए अवतार है यह!
भय करो मत, रो न, गोरी शक्ति को मैं देख लूंगा !

© Copyright @ Authors

मैं कुअर हूँ, तो फिरंगी को जहन्नुम भेज दूंगा!

स्पष्ट अपने लोचनों से एकदिन तुम देख लोगी!

या न होगा कुअर या सरकार फिर गोरी न होगी!"13

उक्त पंक्तियों में एक बूढ़े शेर की दहाड़ इस बात का प्रमाण है कि जब राष्ट्रीय अस्मिता और अस्तित्व पर आक्रमण होता है तो कोई भी उससे खुद को अलग नहीं कर सकता। देश के नागरिक होने के नाते हर किसी को आक्रमण का जवाब देने के लिए हमेशा अग्रिम पंक्ति में तैनात रहना चाहिए। युद्ध में मातृभूमि के लिए बलिदान होना अपने लिए सबसे बड़ा सौभाग्य मानते हैं वीर कुंवर सिंह। आरसी बाबू ने लिखा है–

"शोणित से नहला दूं जग को, ऐसी मचा भयंकर मार!

चारों ओर फैल जायेंगे घोर रुदन औ हाहाकार!

उथल-पुथल मच जाये जग में, कभी न छोड़ अपनी आन!

हँसते-हँसते मातृभूमि-हित हो जाऊँ मैं भी बलिदान!"14

उक्त पंक्तियों से आरसी प्रसाद सिंह का लेखकीय उद्देश्य स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है। वस्तुतः आज भी देश के सामने लगभग वैसी ही चुनौतियां बरकरार हैं जो आरसी बाबू के समय थीं। ऐसे में उनकी वीर रस से ओतप्रोत कविताएं आज भी उतनी ही प्रासंगिक हैं जितनी उस दौर में थीं। जैसे दिनकर की ओजपूर्ण कविताएं आज भी युवाओं के होठों पर तैरती हैं वैसे ही आरसी बाबू की पंक्तियां भी तैरने चाहिए। इसे विडंबना या दुर्भाग्य कहा जाए कि इतिहास के पन्नों में महान राष्ट्रीय चेतना सम्पन्न कवि आरसी प्रसाद सिंह को विस्मृत कर दिया गया है। हिंदी साहित्य की ऐसी विभूति जिनकी प्रशंसा स्वयं आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने की थी, आज हिंदी साहित्य की मुख्यधारा से कट कर रह गए हैं।

निष्कर्ष

रूप से यह कहा जा सकता है कि आरसी प्रसाद सिंह की रचनाओं में प्रगतिवाद और राष्ट्रवाद का अद्भुत संगम लक्षित होता है। वे अपने ढंग के इकलौते कवि हैं जिन्होंने दोनों ही प्रमुख 'वाद' को अपनी विशिष्ट शैली से साधा है। छायावादोत्तर और स्वातंत्र्योत्तर हिंदी काव्य में जो स्थान आरसी प्रसाद सिंह ने प्राप्त किया, वह इस तथ्य को प्रमाणित करता है कि उनकी रचनाओं में जीवन जगमगाता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. सिंह, जितेंद्र कुमार, प्रगतिवादी भावना में आरसी प्रसाद सिंह का योगदान, प्रगतिशील प्रकाशन, संस्करण–2013, पृष्ठ–vii
2. सिंह, डॉ. सत्येंद्र प्रसाद, महाकवि आरसी प्रसाद सिंह और आचार्य कुमुद विद्यालंकार का काव्य–वैभव, डॉ. गोपेश्वर सिंह, अंकुर बुक डिस्ट्रीब्यूटर, संस्करण–2020, फ्लैप से
3. सिंह, जितेंद्र कुमार, प्रगतिवादी भावना में आरसी प्रसाद सिंह का योगदान, प्रगतिशील प्रकाशन, संस्करण–2013, पृष्ठ–vii
4. सिंह, आरसी प्रसाद, आरसी, बोस प्रकाशन, संस्करण–1942, पृष्ठ–188
5. वही, पृष्ठ–170
6. वही, पृष्ठ–136
7. सिंह, आरसी प्रसाद, कालपी, बैद्यनाथ प्रकाशन, संस्करण–1994, पृष्ठ–177
8. सिंह, आरसी प्रसाद, संजीवनी, तारामंडल प्रकाशन, प्रथम संस्करण, पृष्ठ–19

© Copyright @ Authors

9. वही, पृष्ठ–18–19
10. सिंह, आरसी प्रसाद, उदय, तारामंडल प्रकाशन, प्रथम संस्करण, पृष्ठ–74
11. सिंह, डॉ. सत्येंद्र प्रसाद, महाकवि आरसी प्रसाद सिंह और आचार्य कुमुद विद्यालंकार का काव्य–वैभव, अंकुर बुक डिस्ट्रीब्यूटर, संस्करण–2020, पृष्ठ–69
12. जनपथ, संपादक–अनंत सिंह, लेखक–शालिग्राम सिंह अशांत, आशा और आलोक का मनीषी महाकवि आरसी प्रसाद सिंह, पृष्ठ–617
13. सिंह, आरसी प्रसाद, वीरवर कुंवर सिंह, तारामंडल प्रकाशन, प्रथम संस्करण, पृष्ठ–59
14. वही, पृष्ठ–119

© Copyright @ Authors